विकृति विज्ञान - 1

मूत्र की तैल बिन्दु परीक्षा

अध्येता : डा. चन्द्र शर्मा

निर्देशक : प्रो. रामप्रकाश स्वामी

1983 : 208

मूत्र की तैलबिन्दु परीक्षा की रोग निदान में सार्थकता का निर्धारण एवं इन्द्रियावलम्बी रोग निदान पद्धति का विकास करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

मूत्र की आधुनिक परीक्षा, वृहत्त्रयी में निर्दिष्ट धारवार, गंध, संहति एवं दूष्यादि परीक्षा तथा तैल बिन्दु परीक्षा के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। एतदर्थ स्वस्थ व आतुर दोनों वर्गों के 303 प्रतिदर्श लिये गये।

तैल बिदु परीक्षा में रोग निदान ज्ञापक परिणाम का आधार तैल बिन्दु की दिशा, विकास एवं आकृति इत्यादि की स्थिति से ज्ञात किया गया।

मूत्र की तैल बिन्दु परीक्षा में दिशा द्वारा परिणाम सूचन में ग्रह, ज्योतिष, भौगोलिक परिस्थितियां एवं रसायन शास्त्रियों की अवधारणाओं का समावेश भी किया जाना चाहिये, तभी रोग निदान में उपयोगी परिणाम प्राप्त होना सम्भव है, अन्यथा मात्र तैल बिन्दु परीक्षा से उपयोगी परिणाम नहीं आते हैं।

विकृति विज्ञान - 2

पुरीष परीक्षा का नैदानिक अध्ययन

अध्येता : डा. ओमप्रकाश शर्मा

निर्देशक : प्रो. रामप्रकाश स्वामी

1983 : 190

अष्टविध परीक्षाओं में से पुरीष परीक्षा की आयुर्वेदिक विधि का विकास करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

स्रोतोदुष्टि (पुरीषवह) के 25 आतुरों का इतिवृत्तात्मक एवं नव्य परीक्षणों के आधार पर परीक्षण किया।

विस्तृत संकलन के आधार पर पुरीषवह स्रोतोदुष्टि जन्य रोगों में पुरीष प्रतिदर्श की साम निराम, अम्लीय क्षारीय, संहति, आवृत्ति, फेनोद्‌गम आदि के परीक्षण किये गये।

सभी 25 रोगियों में आयुर्वेदीय पुरीष परीक्षा पद्धति द्वारा आयुर्वेद चिकित्सोपयोगी निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

विकृति विज्ञान - 3

तमक श्वास का सम्प्राप्तिपरक अध्ययन

अध्येता : डा. अरविन्द कुमार शर्मा

निर्देशक : प्रो. रामप्रकाश स्वामी

1983 : 307

तमक श्वास के अनूर्जता जनित प्रकारों में आयुर्वेदीय रोग निदान की सम्भावनाओं का पता लगाना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आधुनिक प्रयोगशालीय रक्त परीक्षणों तथा आयुर्वेदीय निदान मापदण्ड के आधार पर 25 तमक श्वास रोगी चयनित किये गए।

यह व्याधि पित्त स्थान की दुष्टि से, प्राणवह स्रोतस् की दुष्टि से, कफवातात्मक स्वरूप की होती है।

इस रोग में आधुनिक परीक्षणों का महत्व होते हुए भी आयुर्वेदीय रोग निदान से रोग ज्ञान की सम्भावनाएं प्रबल हैं।

विकृति विज्ञान - 4

आर्तववह स्रोतो दुष्टि का नैदानिक अध्ययन (आर्तव परीक्षण द्वारा आर्तववह स्रोतो दुष्टि विवेचन)

अध्येता : डा. कीर्ति माथुर

निर्देशक : वैद्य मदनगोपाल शर्मा

1985 : 275

आर्तव के प्रायोगिक अध्ययन में सुलभता तथा स्त्री रोगों में आयुर्वेदीय निदान प्रक्रिया का उपयोग एवं विकास ही महानिबन्धका उद्देश्य है।

आतुरवृत्त पत्रक तथा आर्तव एवं प्रसव इतिवृत्त तथा आर्तव का वर्ण, गंध, स्वरूप परीक्षण, पी.वी. द्वारा श्रोणि परीक्षा तथा आवयविक परीक्षा ही रोगी चयन का आधार था। 30 रुग्णाओं के दो वर्गों में पहले वर्ग में 20 रुग्णायें दुष्टार्त्तव युक्त थी। द्वितीय वर्ग में 10 रुग्णाएं स्वस्थ आर्तव वाली थीं, जिनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

पूर्वरूपावस्था में कोई रुग्णा उपस्थित नहीं हुई, रूपावस्था में अत्यधिक रक्तस्त्राव, वेदनायुक्त स्राव, कटिपृष्ठरूक्, गर्भाशयान्तर कलाशोथ सभी रुग्णाओं में मिले।

सामान्यतः शास्त्रोक्त सभी आर्तव वर्ण प्रतिदर्शों में पाये गए किन्तु ईषत्कृष्ण वर्ण आर्तव सर्वाधिक पाया गया।

विकृति विज्ञान - 5

अग्नि एवं पुरीष परीक्षा द्वारा ग्रहणी रोग विनिश्चिय

अध्येता : डा. राधेश्याम गर्ग

निर्देशक : वैद्य मदनगोपाल शर्मा

1985 : 186

ग्रामीण औषधालयों में रोग निदान हेतु प्रयोगशालीय परीक्षणों का विकास ही अध्ययन का उद्देश्य है।

ग्रहणी रोग के इतिवृत्तात्मक परीक्षण के बाद 25 आतुर चयनित किये गये।

पुरीष परीक्षण—नव्य एवं प्राचीन दोनों विधियों से किया गया, जिसके आधार पर 19 रोगी वातिक ग्रहणी के, 3 पैत्तिक ग्रहणी के तथा 3 श्लैष्मिक ग्रहणी के रोगी मिले।

नैदानिक दृष्ट्या अतिसारोत्तर अग्निमांद्य या स्वतन्त्र अग्निमांद्य ग्रहणी के सभी रोगियों में उदर्क के रूप में परिलक्षित हुआ।

ग्रहणी निदान हेतु आधुनिक परीक्षणों की विशेष उपयोगिता नही है। मात्र आयुर्वेदीय पुरीष परीक्षा तथा इतिवृत्त के आधार पर ही ग्रहणी रोग विनिश्चय किया जा सकना सम्भव है।

विकृति विज्ञान - 6

दोषों के शाखागमन में हेतुत्व (विषम ज्वर के संदर्भ में)

अध्येता : डा. कन्हैयालाल शर्मा

निर्देशक : वैद्य मदनगोपाल शर्मा

1985 : 238+10

विषम ज्वर में दोषों का कोष्ठ से शाखागमन व पुनरागमन सिद्धान्त का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आयुर्वेदीय परीक्षण के आधार पर 20 विषम ज्वर रोगी चयनित किये गये।

प्रयोगार्थ औषध प्रयोग नहीं किया गया किन्तु–आतुरों का इतिवृत्त, ज्वरागमन, ज्वरमोक्ष आदि के विस्तृत विश्लेषण से निष्कर्ष प्राप्त किये गए।

विगत ज्वर के पश्चात् किंचिद् भी ज्वर निदानों के सेवन से पूर्वावशिष्ट ज्वरकारी लीन दोष पुनः प्रकुपित होकर ज्वर में वैषम्य उत्पन्न करते हैं। इस अवस्था में वायु के लक्षणों की प्रधानता रहती है, उत्तरोत्तर गम्भीर धातुगत ज्वरों के लक्षण भी रोगियों में मिलते हैं।

विकृति विज्ञान - 7

पाण्डु रोग सम्प्राप्ति विवेचनान्तर्गत दूष्य (रस–रक्त) परीक्षण

अध्येता : डा. ब्रजेश चन्द्र शर्मा

निर्देशक : वैद्य मदनगोपाल शर्मा

1985 : 198+8

पाण्डुरोग के सम्यक् प्रयोगशालीय अध्ययन का ग्रामीण चिकित्सालयों में विकास करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आतुर पत्रक एवं प्रयोगशालीय परीक्षणों के आधार पर 20 रोगी चयनित किये गये। जिनमें 5.1 ग्रा. प्रतिशत से 11.0 ग्रा. प्रतिशत हीमोग्लोबिन (Hb%) रहा ।

20 में से 10 आतुरों में समकायाण्विक उपवर्णिक रक्तक्षय के साथ–साथ Hb% में न्यूनता या अत्यधिक न्यूनता पाई गई।

इन सभी 10 रोगियों में भी मात्र आयुर्वेदीय षड्विध परीक्षा द्वारा ही रोग निदान सहज रूप में सम्भव था।

विकृति विज्ञान - 8

अन्नवह स्रोतो दुष्टि का नैदानिक अध्ययन एवं शूल का परीक्षणात्मक विवेचन

अध्येता : डा. चम्मनराम

निर्देशक : वैद्य मदनगोपाल शर्मा

1986 : 199

अन्नवह स्रोतो दुष्टि के निदानों का सर्वांगीण अध्ययन एवं शूलोत्पत्ति में कार्यकारण भाव का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आतुर चयन का आधार लक्षणों का षड्विध परीक्षा से ज्ञान तथा शूल का भोजनोपरान्त, भोजन पूर्व,वसायुक्त भोजन से वृद्धि, शांति, अम्लोद्गार के आधार पर तथा F.T.M. और Barium meal test द्वारा रोग निर्धारण किया गया। 50 रोगियों का चयन कर दो वर्ग बनाये गए।

''अ वर्ग'' में निदानों की कार्मुकता का अध्ययन किया गया।

''ब वर्ग'' में आधुनिक परीक्षणों द्वारा रोग निदान किया।

50 रोगियों में से 90 प्रतिशत में रूक्षातिसेवन, 86 प्रतिशत में क्षुधिताम्बुपान, F.T.M. परीक्षण में सभी रोगियों में स्वतन्त्र लवणाम्लता एवं पूर्ण अम्लीयता सामान्य या उससे कम मिली।

Barium meal test में सर्वाधिक रोगियों में व्रणों की स्थिति आमाशय के लेसर कर्वेचर में 60 प्रतिशत मिली। ग्रेटर कर्वेचर में 25 प्रतिशत रोगियों में व्रण मिले।

अन्नद्रव एवं परिणाम शूल का निदान केवल आयुर्वेदीय रोग निदान द्वारा सम्भव नहीं है।

विकृति विज्ञान - 9

आमवात का निदान परक अध्ययन (उपशयानुपशय)

अध्येता : डा. जनार्दन शर्मा

निर्देशक : वैद्य मदनगोपाल शर्मा

1986 : 214

आमवात रोग का विकलांगता से पूर्व रोग ज्ञान संभव हो सके तथा उपशयानुपशय द्वारा रोग निदान की सम्भावनाओं का पता लगाना ही अध्ययन का उद्देश्य है।

रूमेटाइड आर्थ्राइटिस में व आमवात में लक्षणतः सादृश्य को निदान संप्राप्तितः देखने के लिये आतुर वृत्त पत्रक व R.A. test किया गया। कुल 80 रोगी लिये गये जिनमें से केवल 16 रोगियों में R.A. test सम्भव हुआ तथा 8 रोगियों में R.A. +ve मिला फिर भी सभी 16 रोगियों में आमवात के 18 लक्षण उपस्थित थे।

उपशयानुपशय द्वारा 56 रोगियों की परीक्षा की गयी। आहारोपशय द्वारा 48.3 प्रतिशत रोगियों में लक्षणोपशमन हुआ। आहारज अनुपशय द्वारा 60 प्रतिशत रोगियों में लक्षणों में तुरन्त उग्रता होती है। अतः उपशयानुशय आमवात निदान में सहायक प्रतीत होते हैं।

Vikriti Vigyan - 10

A Study of Pathogenesis of Santata jwara

Scholar : Dr. R. Venkateshwar Rao

Supervisor : Vaidya Madan Gopal Sharma

1986 : 186

In this study an attempt were made to evaluate an Ayurvedic approach to diagnosing Santata jwara as also pondering over various fevers described in modern litrature in regard of their Symptomatology as a part of erradication programme of Malaria. Selection of cases through model proforma provided for the purpose. Criteria for the assesment by clinical examination, Lab investigations and therapeutic test.

50 male & 53 female pts. taken for the study.

Conclusion is this that Santata jwara merely not be a vishamajwara but it can be a vishma jwara. It can be included in this by virtue of it's clinical symptomatology and Samprapti.

विकृति विज्ञान - 11

रसवह स्रोतो दुष्टि का नैदानिक अध्ययन हृद्रोगों के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. हरिनारायण पाण्डेय

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1987 : 192

हृद्रोग जैसी घातक व्याधि में आयुर्वेदीय रोग निदान में कार्यकारण भाव का ज्ञान, कार्मुकता तथा सम्प्राप्ति के यथार्थ तत्व का मूल्यांकन ही अध्ययन का उद्देश्य है।

हृद्रोग से आक्रान्त उन रोगियों का ग्रहण किया गया, जिनमें रक्तवह स्रोतोदुष्टि के लक्षण उपलब्ध थे। ये लक्षण प्रश्न व प्रयोगशालीय परीक्षा द्वारा तथा E.C.G. X-Ray परीक्षा द्वारा ज्ञात किये गये।

कुल 50 आतुर लिये गये। प्रयोग के आधार पर अतिगुरू आहार के निरन्तर प्रयोग वाले 42.8 प्रतिशत रोगी मिले, जिनमें रसवह स्रोतस् में संग दुष्टि पायी गयी तथा 23 प्रतिशत हृद्रोग लक्षण भी मिले, 7.1 प्रतिशत रोगियों को हृत्प्रदेश में तीव्र वेदना, 12.5 प्रतिशत में वामपार्श्व में वेदना पायी गयी।

अत्यधिक श्रम से 30.3 प्रतिशत रोगियों में रक्त दुष्टि, 17.8 प्रतिशत रोगियों में अतिस्निग्ध सेवन से भी रस निमित्तज स्रोतोदुष्टि पायी गयी।

विकृति विज्ञान - 12

निदान संप्राप्ति सम्बन्ध विवेचन विबन्ध के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. ब्रजकिशोर मिश्रा

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1987 : 157

विबन्ध स्वतंत्र होता है या लक्षण मात्र तथा इसके निदानों का संप्राप्ति से सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया गया।

विशेष इतिवृत्त द्वारा 50 आतुर चयनित किये गये। जिनमें 46 प्रतिशत क्रूरकोष्ठी, 54 प्रतिशत मध्यकोष्ठ थे।

विबंध वात प्रधान, स्वतन्त्र व परतन्त्र (उभय) व्याधि है, जो शारीरिक श्रम की न्यूनता, आमोत्पत्ति, पुरीष वेगनिग्रह, रूक्ष आहार, प्रमिताशन, अध्यशन, चाय, धूम्रपान का व्यसन रूप में सेवन, अनियमित दिनचर्या तथा रात्रि जागरण से होती है। इस रोग में अंगमर्द, शिरः शूल, कुक्षिशूल, प्रतिश्याय, उदावर्त, आध्मान प्रमुख लक्षण हैं। मलप्रवृत्ति अल्प, अप्रवृत्ति तथा शुष्क मल प्रवृत्ति प्रत्यात्म लक्षण हैं।

विकृति विज्ञान - 13

मूत्राघात निदान–सम्प्राप्ति परक अध्ययन–अष्ठीला के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. शिवचरण शर्मा

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1987 : 192

मूत्रवह संस्थान के रोगों की निकटता को दृष्टिगत रखकर अष्ठीला का निदान संप्राप्ति परक अध्ययन किया गया।

मूत्राघात के 13 भेदों का सामान्य विवेचन करते हुए अष्ठीला रोग का प्रायोगिक अध्ययन किया गया।

60 वर्ष से अधिक आयु के रोगियों में दर्शन, स्पर्शन, प्रश्न, मूत्रपरीक्षा द्वारा रोग–विनिश्चय कर 20 आतुर चयनित किये गये।

90 प्रतिशत आतुरों में धूम्रपान, 75 प्रतिशत में मूत्रवेगनिग्रह एवं वात प्रकोपक कारण यथा – पैदल चलना, रात्रि जागरण, रूक्षभोजन तथा मल मूत्र की अनियमित प्रवृत्ति हेतु के रूप में मिली।

20 प्रतिशत रोगियों में अष्ठीला में स्थानिक शोथ, 15 प्रतिशत में साथ में प्रवाहिका लक्षण भी पाये गये।

विकृति विज्ञान - 14

मूत्रवह स्रोतोदुष्टि विज्ञानीयम् (मधुमेह के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता : डा. अशोक कुमार शर्मा

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1987 : 185

मधुमेह में मूत्रवह स्रोतस् की रचनात्मक एवं क्रियात्मक विकृति हेतु, विकृत लक्षणों में दोष, दूष्य, मल सम्बन्ध तथा निदानों का गुणकर्म सम्बद्धता का ज्ञान ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आतुर चयन का आधार विशेष आतुर वृत्त पत्रक रहा तथा मूत्र प्रयोगशालीय परीक्षण भी किये गये। कुल रोगी 20 चयनित किये गये।

80 प्रतिशत रोगियों में आविल एवं पिच्छिल मूत्रता व 70 प्रतिशत रोगियों में मधुर मूत्रता, मूत्रपरीक्षण में 45 प्रतिशत रोगियों में शर्करा की उपस्थिति भी पायी गयी। लक्षणात्मक निदान व प्रयोगशालीय निदान में सामन्जस्य प्रतीत तो होता है, किन्तु–प्रयोग शालीय परीक्षण मधुमेह निदानार्थ आवश्यक हैं।

विकृति विज्ञान - 15

मूत्राश्मरी का निदान सम्प्राप्ति परक अध्ययन

अध्येता : डा. अशोक कुमार गुप्ता

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1988 : 161

मूत्राश्मरी का शास्त्र वर्णित विवरण एवं सिद्धान्तों का सत्यापन पुनरीक्षण ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आतुरवृत्त पत्रक, प्रयोगशालीय परीक्षणों में मूत्र, रक्त, एवं X Ray परीक्षण तथा मूत्राश्मरी स्फटिकों का तुलनात्मक परीक्षण 25 आतुरों में किया गया।

वातिक अश्मरी के 68 प्रतिशत रोगी थे, जिनमें 80 प्रतिशत रोगियों में मन्दाग्नि, 92 प्रतिशत में अतिगुरू या पार्थिव द्रव्यादि सेवन का इतिवृत्त मिलता है। 32 प्रतिशत रोगी गवीनीगत अश्मरी, 16 प्रतिशत में वृक्काश्मरी व 4 प्रतिशत में मूत्राशय गत अश्मरी प्राप्त हुयी।

विकृति विज्ञान - 16

अम्लपित्त रोग का नैदानिक अध्ययन

अध्येता	:	डा. विनोद कुमार कोठियाल
निर्देशक	:	डा. राधाकान्त शर्मा
1988	:	159

अम्लपित रोग में आहार का निदान परक अध्ययन तथा निदान परिवर्जन द्वारा रोगोपशमन का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आतुरवृत्त पत्रक द्वारा रोग विनिश्चय कर 50 रोगी (33 पुरूष, 17 महिला आतुर) चयनित किए गये। इनमें से 12 रोगियों में F.T.M. Test भी किया गया।

32 प्रतिशत रोगियों में पित्तप्रकोपक आहार कारणों का हेतुत्व प्रतिपादित होता है। मानसिक कारण क्रोध एवं तनाव क्रमशः 22 प्रतिशत तथा 18 प्रतिशत आतुरों में रोगकारी प्रमाणित होते हैं।

विकृति विज्ञान - 17

अर्शोरोग का नैदानिक अध्ययन

अध्येता : डा. दलीप कुमार शर्मा

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1988 : 183

अष्टौमहागद में से अर्शो रोग पर कारक व्याधियों अग्निमांद्य एवं अपान दुष्टि का नैदानिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आतुर चयन आप्तोपदिष्ट रोगी रोग परीक्षा विधि तथा प्रत्यक्षतः अर्श मांसाकुरों को देखकर किया गया। कुल 50 रोगी (46 पुरूष, 4 महिला आतुर) लिये गये। जिनमें 20 प्रतिशत में शुष्कार्श व शेष 80 प्रतिशत में स्रावी अर्श थे।

80 प्रतिशत आतुरों में मिथ्याहार व तीक्ष्ण भोजन तथा 74 प्रतिशत में मल मूत्र वेग धारण तथा 64 प्रतिशत आतुरों में मन्दाग्नि का इतिवृत्त मिलता है।

विकृति विज्ञान - 18

जलोदर रोग का निदान सम्प्राप्ति परक अध्ययन

अध्येता : डा. सुधा शर्मा

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1988 : 225

कृच्छ्रतम व्याधि जलोदर का निदान संप्राप्ति परक अध्ययन करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आतुरवृत्त पत्रकानुसार 20 रोगियों का चयन कर जलोदर कारणों का विस्तृत विवेचन किया गया।

जलोदर वातिक व वातपैत्तिक प्रकृति के आतुरों को जो स्वभावतः कृश अथवा व्याधिकर्शित होते हैं, इन्हें कुपोषण अथवा रूक्ष सेवन मन्दाग्नि, अर्श और ग्रहणी रोगों में रोगोत्तर काल में अथवा स्वतन्त्र रूप से होने वाली व्याधि है।

विकृति विज्ञान - 19

कामला का नैदानिक अध्ययन

अध्येता : डा. ब्रजबिहारी मिश्रा

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1989 : 175

उपशय की दृष्टि से कामला में प्रयुक्त औषधि एवं आहार विहार का प्रायोगिक नैदानिक परीक्षण ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आतुर वृत्त पत्रक, रोगी रोग परीक्षा एवं रक्त की जैवरासायनिक परीक्षाओं के आधार पर 25 आतुरों का चयन कर उपशयात्मक दृष्टि से आरोग्यवर्द्धिनी 800 मि.ग्रा. की एक से 4 गोली 12 दिन तक प्रयुक्त की गयी।

प्रयोगार्थ रोगियों को शाखाश्रित एवं कोष्ठाश्रित दो वर्गों में विभक्त किया गया।

औषधि परिणाम विवेचन नहीं किया गया, अपितु शाखाश्रित एवं कोष्ठाश्रित कामला का अध्ययन करने से प्राप्त निष्कर्ष है कि – शाखाश्रित कामला में Serum bilirubin और SGOT एवं SGPT की वृद्धि सर्वाधिक होती है। कोष्ठाश्रित कामला में Sterco Bilinogen पाया जाता है जो शाखाश्रित कामला रोगियों में अनुपस्थित पाया जाता है।

विकृति विज्ञान - 20

उच्च रक्तभार (आर्टीरियल हायपरटेन्शन) निदान सम्प्राप्ति विमर्श रक्तावृत्त वात के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. उमेश चन्द्र पाठक

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1989 : 187

रक्तभार वृद्धि एक अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य समस्या होने से इसका निदान परक अध्ययन तथा रक्तावृत्त वात से इसका तुलनात्मक अध्ययन ही प्रमुख उद्देश्य है।

जटामांसी, सर्पगंधा तथा शंखपुष्पीचूर्ण का उपशयात्मक अध्ययन एवं लवणरहित अन्न की कार्मुकता का अध्ययन भी किया गया।

रक्तदाब अंकन ही आतुर चयन का आधार है।

कुल अधीत 20 रोगियों में 5 वर्ग बनाये गये हैं।

1— केवल शंखपुष्पी चूर्ण 500 mg x 3 बार

2— शंखपुष्पी + जटामांसी चूर्ण 500 mg x 3 बार

3— शंखपुष्पी + सर्पगंधा चूर्ण 500 mg x 3 बार

4— जटामांसी चूर्ण 500 mg x 3 बार

5— सर्पगन्धा चूर्ण 500 mg x 3 बार दिया गया।

इनमें से ग्रुप 1, 3 व 5 में 75 प्रतिशत के रक्तभार में कमी आयी। जबकि ग्रुप 2 व 4 में प्रयोग से 50 प्रतिशत रोगियों में रक्तभार में कमी परिलक्षित हुई। लवण रहित आहार का उपशयात्मक प्रयोग प्रभावी प्रतीत होता है।

विकृति विज्ञान - 21

स्थौल्य (मेदोरोग) का नैदानिक अध्ययन

अध्येता : डा. वीणा चतुर्वेदी

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1989 : 154

स्थौल्य नियन्त्रण में निदान परिवर्जन की कार्मुकता का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

विशिष्ट स्थौल्य निदर्शक तालिका तथा इतिवृत्त के आधार पर 20 स्थौल्य रोगियों का चयन कर उनके जैवरासायनिक परीक्षणों में Hb%, E.S.R., Serum Cholestrol, Total lipids, निदान परिवर्जन पूर्व व पश्चात् कराये गये।

उपशयार्थ आतुरों को 60 दिन तक त्रिफला गुग्गुलु व रसोन गुग्गुलु की 2–2 गोली दिन में 2 बार प्रयुक्त की। सभी आतुर 20 वर्ष से अधिक आयु वाले थे।

60 दिन के औषध प्रयोग व निदान परिवर्जन पश्चात् किये गये सर्वेक्षणों में शरीर भार में औसत कमी 2–3 किलोग्राम रही । वक्ष, उदर, स्फिग् प्रदेश के माप में उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ। Hb% में – 2 Gm% से + 1.5 Gm% परिवर्तन हुआ। E.S.R. में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। Serum Cholestrol में 10–22 mg/100 ml का सुधार परिलक्षित हुआ। जबकि Total Lipids में 30–65 mg/100 ml की वृद्धि परिलक्षित हुई।

विकृति विज्ञान - 22

प्रदर का नैदानिक अध्ययन (श्वेत प्रदर)

अध्येता : डा. सरोज ओझा

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1989 : 179

स्त्री रोगों में श्वेतप्रदर का विकृति वैज्ञानिक एवं नैदानिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

योनि स्राव की दूष्य, देश, प्रकृति इत्यादि दशविध परीक्षाओं के साथ प्रयोगशालीय जीवाणु परीक्षण संवर्द्धन एवं इतिवृत्त के आधार पर 50 रुग्णाओं का चयन किया गया।

उपशयार्थ पुष्यानुग चूर्ण का आभ्यन्तर प्रयोग व माजूफल तथा शुभ्रा भस्म का योनि में पिचु धारण के रूप में प्रयोग किया गया।

10 रुग्णाओं में स्राव की जीवाणु परीक्षा में 6 प्रतिदर्शी में जीवाणु अनुपस्थित थे। 2 में ट्राइकोमोनास वेजाइनेलिस व 2 में एल्बीकेन्स केन्डिडा जीवाणु पाये गये।

92 प्रतिशत विवाहित महिलाओं में श्वेत प्रदर पाया गया। अल्पनिद्रा, दुर्बलता, अशौच, अधिक संतानोत्पत्ति, अम्ल, कटु आहार आदि निदानों की श्वेत प्रदर में सर्वाधिक कार्मुकता प्रतीत होती है।

उपशय औषधि से 18 रुग्णाओं को पूर्ण लाभ, 27 को मध्यम लाभ तथा 5 को कोई लाभ नहीं रहा।

विकृति विज्ञान - 23

हृत्मर्मोपघातज शोथ में वनपलाण्डु का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. राधाबल्लभ सती

निर्देशक : डा. राधाकान्त शर्मा

1990 : 207

दोषकृत मर्मोपघात जन्य शोथ के अन्तर्गत हृत्मर्मोपघातज शोथ का निदान संप्राप्ति परक अध्ययन तथा उपशय का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

अध्येता ने हृत्मर्मोपघातज शोथ का वैज्ञानिक दृष्ट्या निदान संप्राप्ति परक प्रायोगिक अध्ययन किया है। शोथ के षट्क्रियाकालों का वर्णन सर्वप्रथम किया गया है।

शोथ, यकृत्वृद्धि, कण्ठशिरा उभार, श्रम श्वासाधिक्य, कास लक्षणों तथा X-Ray, ECG, एवं Echo Cardiography के आधार पर 20 आतुर चयनित किये गये।

उपशयार्थ वनपलाण्डु (Argenia Indica) को चूर्ण रूप में 100 mg x 3 नीम्बू स्वरस से 14 दिन तक दिया गया। साथ में पुनर्नवाष्टक क्वाथ 20 ml x 2, 14 दिन तक भी दिया गया।

20 में से 17 रोगियों में शोथ, यकृत्वृद्धि, कण्ठशिरा उभार, श्वास कृच्छ्रता, अल्प–मूत्रता में पूर्ण लाभ हुआ।

वनपलाण्डु से हृल्लास, वमन, हृत्गतिमंदता लक्षण उत्पन्न हुए। 5 रोगी ऐसे भी थे जो विगत 4 माह से केवल पुनर्नवाष्टक क्वाथ ले रहे थे – किन्तु वन पलाण्डू चूर्ण संयुक्त करने पर ही लाभ प्राप्त हुआ।

प्रत्येक रोगी का चिकित्सा पूर्व व पश्चात् ECG व X-Ray Chest कराया गया इसके लिये अध्येता ने पर्याप्त रिकार्ड संलग्न किया है। तथा हृत्मर्मोपघात जन्य शोथ की संप्राप्ति नये ढंग से प्रस्तुत की है।